**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(9): 44-47
Received: 08-08-2023
Accepted: 12-09-2023

**संतोष कुमार विश्वकर्मा**
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी**
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**संतोष कुमार विश्वकर्मा**
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

# सतना जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

**संतोष कुमार विश्वकर्मा, डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i9a.1053

**सारांश**
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य को सतना जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 माध्यमिक विद्यालय कुल 48 विद्यालयों से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 960 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया गया है। पर्यावरण के विभिन्न एवं असंख्य महत्त्वपूर्ण प्रकार्य हैं। कोयला, तेल आदि स्पृश्य संसाधन प्रदान करने के अलावा, यह स्वच्छ वायु एवं जल आदि अनेक अगोचर लाभ भी देता है। अनेक पर्यावरणीय पक्ष, जैसे ओज़ोन परत, मानव मात्र की जीवन धारण के लिए अति महत्त्वपूर्ण हैं। हम पर्यावरण का मूल्यांकन कर प्रकृति पर मूल्य अंकित नहीं कर रहे, क्योंकि, वह तो सहज ही अमूल्य है। फिर भी, चूँकि ग़ैर.कीमत अंकित सेवाएँ समाज के प्रति नकारात्मक बाह्यताओं से पूर्ण अति.दोहनकारी प्रयोग के अधीन हैं, पर्यावरणीय सेवाओं का मूल्यांकन उनके उचित प्रयोग को सरल और कारगर बनाने में सहायक होता है। शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीयमूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और इसी प्रकार छात्र और छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**कुटशब्दः** सतना जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, पर्यावरणीय मूल्य

## प्रस्तावना
भारत में प्राचीनकाल से आदर्शवादी जीवन मूल्यों तथा धार्मिकतापूर्ण जीवन की प्रधानता रही है। भारतीय शिक्षा इनसे प्रभावित हुई और उसने इन जीवन मूल्यों का संरक्षण करते हुए उन्हें आगामी पीढ़ियों को हस्तान्तरित भी किया। समाज में बढ़ती हुई कटुता और अनावश्यक मूल्यों से उत्पन्न चिन्ता ने पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता उत्पन्न कर दी है। जिससे भारत के सामाजिक और नैतिक मूल्यों को पर्यावरणीय मूल्यों के विकास के लिए प्रभावशाली उपकरण बनाया जा सकता है। पर्यावरणीय शिक्षा का अभिप्राय पर्यावरण के विषय में ज्ञान प्रदान करने, पर्यावरण का संरक्षण करने तथा इसके लिए किये जाने वाले उपायों की शिक्षा पर्यावरण शिक्षा के अन्तर्गत प्रकृति में पारिस्थितिकी सन्तुलन की स्थापना करने तथा प्रदूषण के नियम से सम्बन्धित विषयवस्तु का ज्ञान कराये जाने की संकल्पना निहित है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए पर्यावरण में भौतिक एवं जैविक अंगों को ही समाहित किया गया है। विषयवस्तु के किसी भी अंश से जहॉ भी जैविक एवं भौतिक पर्यावरण से सम्बन्धित कोई विचार, प्रकरण, संदेश, उभरता हुआ प्रतीत हुआ, उसे पर्यावरण मूल्य के रूप में अध्ययन हेतु स्वीकार कर लिया गया है। पर्यावरण के ऐसे ही तत्व, गुण, आवश्यक जोकि हमारे लिये धारण योग्य हो सकते हैं, मूल्यवान हो सकते है, पर्यावरणीय मूल्य कहे जा सकते हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा के मूल्यों के सन्दर्भ में विचार किया जाए तो यह तथ्य दृष्टिगोचर होता है कि मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष का विकास पर्यावरण शिक्षा के अभाव में अधूरा है। पर्यावरणीय शिक्षा के प्रमुख मूल्य निम्नानुसार है–

1. **वैज्ञानिक मूल्यः** पर्यावरणीय शिक्षा मानव में शिक्षा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है। पर्यावरणीय ज्ञान को क्रमबद्ध एवं सुसंगठित रूप में प्रस्तुत करना एवं छात्रों में तर्कशक्ति का विकास करना पर्यावरणीय शिक्षा के प्रमुख मूल्य हैं। जैसे– पृथ्वी के ताप में वृद्धि हो रही है तो इसका कारण हरित गृह प्रभाव होगा। इसका ज्ञान पर्यावरणीय शिक्षा में मिलता है। इसको नियंत्रण करने के लिए क्या उपाय करने चाहिए? इन सभी तथ्यों का ज्ञान पर्यावरणीय शिक्षा में मिलता है।

2. **व्यावहारिक मूल्यः** पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख मूल्य व्यावहारिकता है। इस शिक्षा के द्वारा विभिन्न सिद्धान्तों एवं नियमों का व्यावहारिक प्रयोग सम्भव होता है। व्यवहार में आने वाली प्रमुख समस्याएँ एवं उनका समाधान प्रस्तत किया जाता है। प्राप्त ज्ञान का प्रयोग छात्र अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार करता है? इन सभी व्यावहारिक मूल्यों को पर्यावरणीय शिक्षा के द्वारा विकसित किया जाता है।
3. **सामाजिक मूल्यः** पर्यावरणीय शिक्षा का प्रमुख मूल्य सामाजिक भावना एवं गुणों का विकास करता है। पर्यावरण शिक्षा से छात्र में सहयोग मानवीयता एवं उचित दृष्टिकोण का विकास होता है। समाज में पर्यावरण प्रदूषण का क्या प्रभाव होगा? उसके समाज के प्रति क्या उत्तरदायित्व है? इन सभी तथ्यों को पर्यावरण शिक्षा में सम्मिलित किया जाता है। जैसे–जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण से सम्पूर्ण मानव जाति को हानि हो रही है तो इसके नियंत्रण के लिए सहयोग एवं जागरूकता से कार्य करना आवश्यक है। इस भावना से ज्ञान के छात्र में सामाजिक मूल्यों का विकास होगा।
4. **अनुशासनात्मक मूल्यः** पर्यावरण शिक्षा में जैविक पर्यावरण के प्रति मन एवं मस्तिष्क में अनुशासन स्थापित किया जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र की अन्तः निर्भरता एवं श्रवणेन्द्रिय और दृ श्येन्द्रिय में सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसमें प्रत्येक घटना के प्रति जिज्ञासा को क्रमबद्ध रूप से शान्त किया जाता हैं। जिससे छात्र में आत्मा दृढ़ता एवं विश्वास उत्पन्न होता है। इसमें किसी प्रकार के अन्धविश्वास एवं अनियमितता प्रयोग सम्बन्धी मूल्यों को विकसित किया जाता है। इसमें सिद्धान्त के साथ–साथ छात्रों में उसकी प्रक्रिया का ज्ञान कराया जाता है। जिससे छात्रों में सृजनात्मक शक्ति एवं प्रायोगिक मूल्यों का विकास किया जाता है। छात्रों में प्रत्येक के उचित सम्पादन एवं उसकी सावधानियों का ज्ञान भी पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से मिलता है।
5. **राजनीतिक मूल्यः** पर्यावरण शिक्षा के द्वारा छात्रों में एक स्वस्थ नागरिकता के मूल्यों का विकास किया जाता है। इसके ज्ञान के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों की समीक्षा देशहित एवं विकास के सन्दर्भ में करता है। इसके द्वारा छात्रों में राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय सद्भाव की भावना का विकास होता है क्योंकि पर्यावरणीय मूल्यों का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर सम्पूर्ण राज्य एवं उसकी व्यवस्था से होता है। जैसे– राजनीतिक पर्यावरण में निरंकुश शासन प्रणाली को स्वीकार न करके लोकतंत्रात्मक प्रणाली को स्वीकार किया जाता है क्योंकि लोकतंत्र में मानव के सर्वांगीण विकास की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया जाता है।
6. **प्राकृतिक मूल्यः** यह पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण मूल्य है। इसके अन्तर्गत संसाधनों की उपलब्धता एवं संरक्षण सम्बन्धी क्रियाकलापों का ज्ञान कराया जाता है। जैसे–वनों का संरक्षण एवं वनों से लाभ आदि का मानवीय चेतना का अनिवार्य अंग बनाया जाता है। पर्यावरण शिक्षा में प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग को ध्यान में रखा जाता है। इससे मानव में प्रकृति के प्रति प्रेम एवं उसके संरक्षण की भावना उत्पन्न होती है।
7. **सांस्कृतिक मूल्यः** पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से समस्त सांस्कृतिक मूल्यों को एक ही मंच पर देखा जा सकता है। इसके माध्यम से ग्रामीण संस्कृति के मूल्य एवं नागरीय संस्कृति एकता के मूल्यों की शिक्षा प्राप्त होती है।
8. **वैश्विक मूल्यः** पर्यावरणीय शिक्षा में वैश्विक मूल्यों का समावेश किया गया है। पर्यावरणीय शिक्षा वैश्विक चुनौती का समाधान प्रस्तुत करती है। जैसे–ओजोन परत के क्षरण की समस्या किसी एक देश की न होकर सम्पूर्ण विश्व की है। इसके लिए सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों का उत्तरदायित्व बनता है कि वे ओजोन परत के संरक्षण सम्बन्धी उपायों का पालन करें। इससे मानव में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं सहयोग जैसे मूल्यों का विकास होता है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। पर्यावरणीय शिक्षा मूल्यों की निधि है, जिनको कि मानव में विकसित करना अनिवार्य एवं आवश्यक है। पर्यावरणीय मूल्यों के विकास के अभाव में सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव नहीं हो सकता है। पर्यावरण शिक्षा के मूल्यों के सन्दर्भ में प्रो. एम.के. दुबे का कथन है कि, "प्राचीन एवं वर्तमान समय में पर्यावरणीय मूल्यों के संरक्षण हेतु समय–समय पर धर्म, राज्य, सदग्रन्थ एवं विद्वानों ने अपना योगदान दिया है क्योंकि इसके महत्त्व एवं उपयोगिता को किसी भी युग में अस्वीकार नहीं किया है। अतः पर्यावरणीय मूल्य मानव जीवन के विकास एवं गुणवत्ता के मूल आधार हैं।"

## 3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

## 4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पना से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

जेम्स ई. ग्रीटन के अनुसार– ''परिकल्पना सम्भावित मानी हुई समस्या का हल होती है, जिसकी व्याख्या उस परिस्थिति से निरीक्षण के आधार पर की जा सकती है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना, (सुहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

### 6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

1. **सर्वेक्षण विधिः** प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।
2. **सांख्यिकी विधिः** प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

### 7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित सतना जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 6–6 विद्यालय कुल 48 विद्यालयों से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 960 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

### 8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], शर्मा, आर.ए. (1995)[3], शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007)[4], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[5], बनर्जी, शुभंकर (1996)[6], जरीना और अब्दुल समद (2013)[7], कुमार, मुकेश (2022)[8], रोली, एस. (1995)[9]।

### 9. शोध क्षेत्र का परिचय

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

### 10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**परिकल्पना क्र. – 1:** "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

**सारणी 1 :** शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

| समूह | | शहरी | ग्रामीण |
|---|---|---|---|
| समूह की संख्या (N) | | 480 | 480 |
| मध्यमान (M) | | 61.75 | 61.08 |
| मानक विचलन (SD) | | 15.51 | 14.95 |
| क्रान्तिक निष्पत्ति ('t') | | 0.68 | |
| निष्कर्ष | 0.05 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नहीं है | |
| | 0.01 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नहीं है | |

df = (N1-1) + (N2-1)
df = (480-1) + (480-1) = 479 + 479 = 958

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.75 है तथा मानक विचलन 15.91 है और ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.08 है तथा मानक विचलन 14.95 है।

958 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 0.68 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

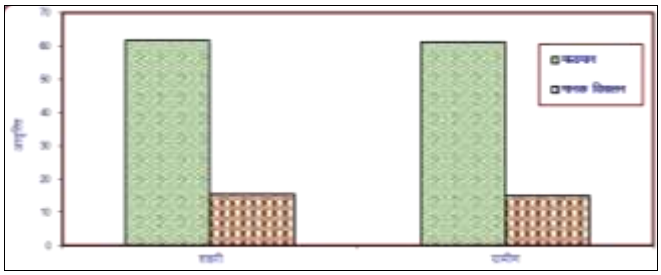

**आरेख 1 :** शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

**परिकल्पना क्र. – 2:** "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

**सारणी 2 :** शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

| समूह | | छात्र | छात्राएँ |
|---|---|---|---|
| समूह की संख्या (N) | | 480 | 480 |
| मध्यमान (M) | | 59.77 | 60.29 |
| मानक विचलन (SD) | | 15.44 | 14.73 |
| क्रान्तिक निष्पत्ति ('t') | | 0.53 | |
| निष्कर्ष | 0.05 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नहीं है | |
| | 0.01 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नहीं है | |

df = (N1-1) + (N2-1)
df = (480-1) + (480-1) = 479 + 479 = 958

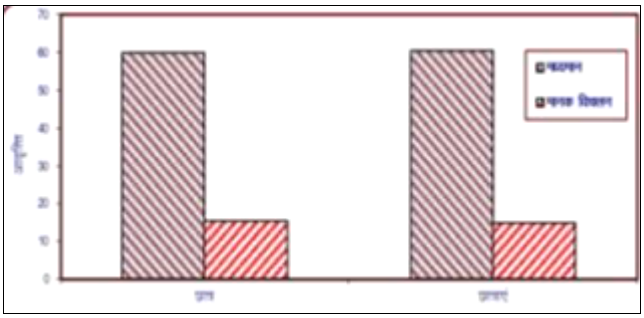

**आरेख 2 :** शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यों से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के पर्यावरणीय मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.77 है तथा मानक विचलन 15.44 है और छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 60.29 है तथा मानक विचलन 14.73 है।

958 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 0.53 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

## 11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.75 है तथा मानक विचलन 15.91 है और ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.08 है तथा मानक विचलन 14.95 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के पर्यावरणीय मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.77 है तथा मानक विचलन 15.44 है और छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यो में सार्थकता का औसत मध्यमान 60.29 है तथा मानक विचलन 14. 73 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और इसी प्रकार छात्र और छात्राओं के पर्यावरणीय मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 12. संदर्भ


1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. शर्मा, आर.ए. (1995): मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ.
4. शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) : मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा.
5- कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021): सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research; 7(1): 400-403.
6. बनर्जी, शुभंकर (1996) : पर्यावरण की रक्षा के लिए जन आन्दोलन आवश्यक, कुरूक्षेत्र, 14–17.
7. जरीना और अब्दुल समद (2013) : सेकेंडरी स्कूल में विज्ञान के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता पर पर्यावरण विशेषज्ञों के सर्वेक्षण का अध्ययन.
8- कुमार, मुकेश (2022) : उच्चतर माध्यमिक व स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता–एक अध्ययन, Academic Social Research:(P),(E) ISSN: 2456-2645, Impact Factor: 5.128, 7(4).
9. रोली, एस. (1995) : जबलपुर जिले में पर्यावरण शिक्षा की दिशा में हाई स्कूल के शिक्षकों की जागरूकता की दृष्टिकोण की जाँच का अध्ययन.